विनोद कुमार शुक्ल

हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़!

(VIII)

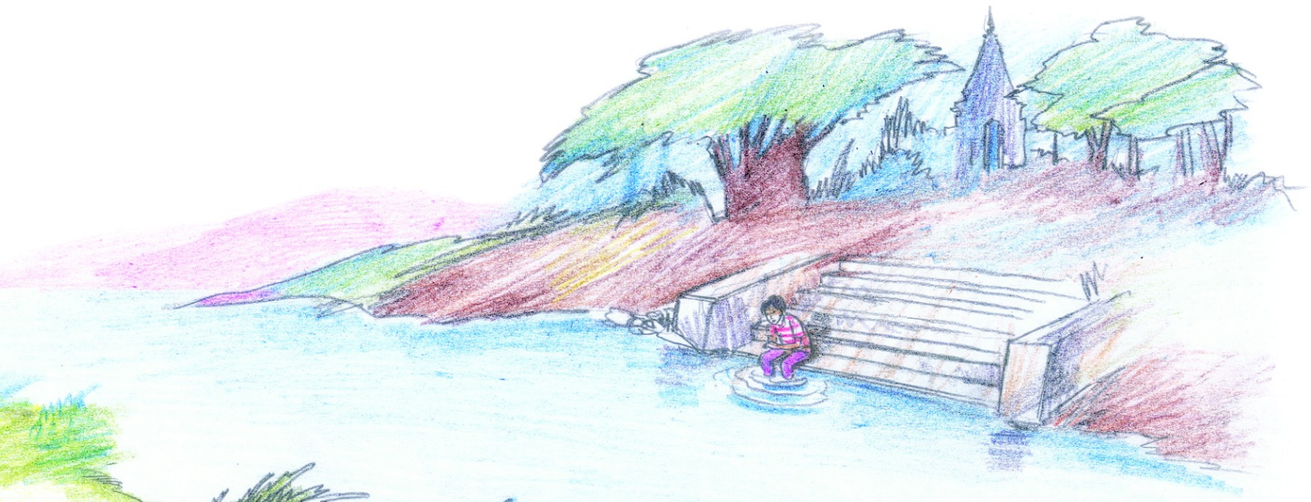

कूना की बड़ी-बड़ी आँखें थीं। कूना की माँ कहती थी कि कूना की आँखें खंजन चिड़िया की तरह हैं। कूना को खंजन जैसी आँखें समझ में नहीं आती थीं कि खंजन जैसी आँख सुन्दर कैसे हुई। कभी उसे लगता पलक झपकना पंख मारने जैसा है। और पलक झपकते ही दृष्टि दूर उड़कर चली जाती है। पर उड़कर स्वयं तो नहीं पहुँचते। पक्षी की दृष्टि सामने दूर तक होती और वह अपने पंख से उड़ते हुए स्वयं वहाँ पहुँचता रहता। कूना अपनी खंजन जैसी आँख बन्द कर ले तो कुछ दिखता नहीं। बन्द आँख से वह अपने हाथ को देखती तो दिखाई नहीं देता। आइने के सामने आँख बन्द कर ले तो उसे अपना चेहरा नहीं दिखाई देता। खंजन जैसी आँख बन्द होने पर उसे गायब कर देती थी। किताब पढ़ते हुए स्कूल जाता बोलू आसपास को कम देखते हुए और पहले के देखे हुए का अधिक अनुमान लगाते हुए स्कूल में अपने बैठने की जगह पर पहुँच जाता। जैसे स्कूल के लिए बाएँ मोड़ के पास एक बरगद का पेड़ है। पेड़ नहीं देख पाते तो उसकी छाया दिख जाती। सिर झुकाए पढ़ते जाते हुए पेड़ की छाया नहीं दिखी तो बरगद की झरी हुई पत्तियाँ दिख जाती। यह भी नहीं तो मुड़कर देख लेते कि गलत तो नहीं मुड़ गए। जन्म से न देख पाने वालों के पास बिना देखे का अनुमान है। और पहले के टटोले हुए का अनुमान भी।

●

बच्चों का मन छुट्टियों में भी स्कूल आने का होता। और स्कूल में मन होता कि छुट्टी के दिन की तरह पढ़ाई हो। छुट्टी के दिन क्या पढ़ाई की जाए यह गुरुजी या मास्टर जी को बताया जाता तो उनको अच्छा लगता था। कोई बहुत अच्छी बात होती तो वे खुश होकर ताली बजाते और हँसते हा, हा, हा।

बोलू और भैरा की अखाड़े वाली बात सबको मालूम थी। बोलू जब बता रहा था तो वह बहुत-सी बातें बताना भूल जाता था। कुछ बातें ऐसी थीं जिसमें वह शामिल होता था और उसे मालूम नहीं होती थीं। जिसमें वह खो जाता था वे बातें। बताते हुए बोलू अखाड़े तक चला। जो बात बताने से छूट जातीं उसे कूना या कोई दूसरा बताता तो कूना को अच्छा नहीं लगता था। बोलू बताता तो भी। उसे लगता सारी बात वही बताए। वैसे भैरा ने स्कूल जाना छोड़ दिया था पर छुट्टी के दिन की पढ़ाई में वह उपस्थित होता। छुट्टी के दिन की पढ़ाई यदि स्कूल में हो तो शायद वो स्कूल भी जाता। भैरा भी बताने लगा था। बोलू से जानबूझकर टक्कर मारने की बात वह छुपाना चाहता था। पर बीच-बीच में कूना टोकती कि सच बोलना। इससे भैरा ने सच कहा। कूना नहीं टोकती तो भी हो सकता था कि वह सच बोलता। भैरा के कहने का कूना ने समर्थन किया। कूना ने कहा कि भैरा सच बोल रहा है। कूना ने जब बताया कि उसने छुट्टी के दिन की पढ़ाई में बोलू को उड़ते देखा था तो गुरुजी हँसने लगे थे हा, हा, हा। कूना ने पूछा, "आप हँसने क्यों लगे गुरुजी?" गुरुजी ने कहा, "तुम्हारा बताना अच्छा लगा।"

छुट्टी के दिन मछली गिनने का काम बीनू का था। वह सरोवर की मछली की गिनती नहीं कर पाया था। वह गिनता जाता और गिनता जाता। वह पानी को छूने वाली पत्थर की सीढ़ी पर उकड़ू बैठा था। सरोवर की सारी मछलियों ने उसे देख लिया था। उसको न भी देखा हो तो उसकी परछाई को देखा होगा जो तालाब पर पड़ रही थी। मछलियों के आने से बीनू की परछाई गड़बड़ हो गई थी। मछलियाँ उसके पास आ-जा रही थीं। एक पल को भी स्थिर नहीं थीं। उसका गिनना भी एक पल को स्थिर नहीं था। वह आती मछलियों को गिनता और जाती मछलियों को भी। यह सोचकर कि शायद न गिना हो। मछलियों को गिनता हुआ वह थक रहा था। मछलियों के तैरने, उछलने, डुबकी लगाने के साथ-साथ उसकी गिनती भी तैरती, उछलती और डुबकी लगाती थी। बिना गिनी भागती मछली को वह पकड़ने का यत्न करता। वह फिसल जाती तो उसका गिनना भी फिसल जाता। मछली डुबकी लगाती तो उसका मन भी डुबकी लगाकर उसके पीछे जाने का होता।

मछली के उछलने से एक बार तो वह भी उछला था और फिसलकर नीचे की डूबी सीढ़ी पर आ गया था। उनका तैरना ऐसा लग रहा था कि तैर नहीं रही हों अपने को गिनवाने के लिए छटपटा रही हों। गिनी गई मछलियाँ लौट आती थीं कि न गिनी गई हों। अपने को कई बार गिनवाने का उनका मन होता होगा। बीनू उनको खाने के लिए आटे की गोलियाँ भी नहीं दे रहा था कि खाने के लालच में आ रही हों। लगता संसार भर की मछलियाँ इस सरोवर में हैं। बीनू के आसपास तैरती हुई थोड़ी-सी ये मछलियाँ अनगिनत थीं। इससे अच्छा तारों को गिनना था। बीनू भीग गया था। थोड़ी देर में वह थक चुका था। उससे सब गलत हुआ वह यह जान रहा था। मेंढक की डुबकी को भी शायद उसने अपनी गिनती में शामिल किया था। उसे भूख लग रही थी। वह रुआँसा हो गया था। पर यह भी लगता था कि गिनती ठीक रही होगी।

वह घर लौट आया। पिता ने पूछा, "छुट्टी के दिन की पढ़ाई हो गई?" उसने "जी" कहा।

कुएँ में बालटी डाल कर हाथ-मुँह धोने के लिए उसने पानी निकाला। बालटी में एक छोटी-सी मछली तैर रही थी। "अट्ठारह सौ उनचालीस" चिल्लाकर उसने कहा। उसे लगा कि यदि वह फिर कुएँ से एक बालटी पानी निकाले तो अट्ठारह सौ चालीस हो जाएँगी। बालटी में अट्ठारह सौ उनचालीसवीं मछली तैर रही थी। उसे लगा कि उसने सरोवर की मछली में कुएँ की मछली जोड़ दी है। बालटी के पानी को मछली समेत उसने कुएँ में उड़ेल दिया।

छुट्टी के दिन की पढ़ाई स्कूल में नहीं होती थी। स्कूल से बाहर कहीं भी होती थी। कूना ने मास्टर जी से पूछा, "मास्टर जी क्या स्कूल में छुट्टी के दिन की पढ़ाई हो सकती है?" मास्टर जी ने कहा, "हो सकती है। यह पढ़ाई तुम्हें खुद करनी होगी।"

पर मास्टर जी को समझ में नहीं आ रहा था कि स्कूल में छुट्टी का दिन कैसे लगेगा। स्कूल में पढ़ाई का दिन तो लगता है। समय पर घण्टा बजता है। प्रार्थना होती है। कक्षाएँ लगती हैं। बच्चे बस्ता लाते हैं। बच्चे बस्ता न लाएँ, किस दिन यह हो? रविवार सप्ताहिक छुट्टी का दिन है। क्या उस दिन स्कूल में छुट्टी का दिन लगे? या बाकी किसी स्कूल के दिन? बच्चों को स्कूल में छुट्टी का दिन अपरिचित लगेगा। स्कूल अपरिचित नहीं लगेगा। वैसे भी बच्चे छुट्टी के दिन भी स्कूल आना चाहते हैं। छुट्टी के दिन लड़के अपनी-अपनी कक्षा में रहें? उतने ही बच्चे जिस कक्षा के उसी कक्षा में रहें या अदल-बदल हो जाएँ। मास्टर जी ने कहा, "बच्चो तुम लोग सोचकर मुझे बताओ कि स्कूल में छुट्टी के दिन की पढ़ाई किस तरह होगी।"

एक लड़के ने कहा, "एकदम सुबह से होगी।" लड़के आपस में बात करने लगे,

- सुबह स्कूल में हो या घर में।
- सुबह स्कूल में हो।
- सुबह स्कूल में हो तो रात को स्कूल में होगा सोना।
- रात को बिस्तर लाना होगा।
- मैं तो माँ के साथ सोती हूँ।
- माँ को भी लाना होगा।
- पिता घर में अकेले रहेंगे तो उन को डर लगेगा।
- पिता को भी लाना होगा।
- मेरे घर बिल्ली है।

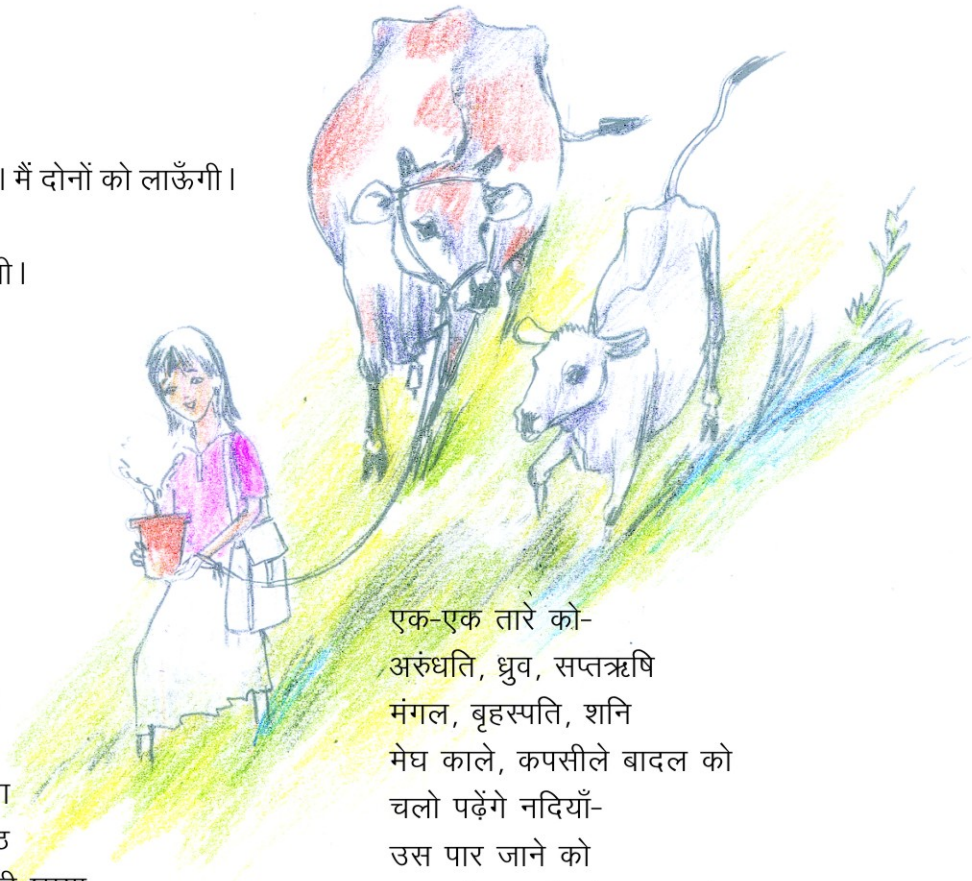

- बिल्ली को साथ लाना।
- मेरे घर गाय और बछड़ा है। मैं दोनों को लाऊँगी।
- मैं अपना कुत्ता लाऊँगा।
- मैं तुलसी का गमला लाऊँगी।
- तुलसी का गमला क्यों?
- सुबह पानी कौन डालेगा?

गाते-गाते बात करने लगे,

एक के घर में कुत्ता है
एक के घर में गाय
एक के दादा बूढ़े हैं
एक की बूढ़ी नानी
नातिन उसके साथ
मेरे घर में दस पेड़ों की छाया
उसके घर में पचास
लानी होगी उन पेड़ों की छाया
तो लाना पेड़ों को कुल साठ
अरे नहीं। नानी सब पेड़ों की छाया
अजिया सबको फूलो-फलो की देती आस
एक लड़की ने गाया-
मेरे घर को स्कूल बनाकर छुट्टी का दिन पढ़ लो
तो दूसरे लड़के ने गाया-
बजरंग होटल को स्कूल बनाकर चलो पढ़ाई कर लें

बहुत से लड़के इसके लिए तैयार नहीं हुए। उन लोगों ने कहा-

छुट्टी के दिन की पढ़ाई हरी घास की छत पर हो।

क्या हरी घास की छप्पर पक्की है?

बोलू ने कहा, हाँ पक्की है, हरी घास की छप्पर पर धरती है।

जैसे धरती पर घास उगती है छप्पर पर उगती है।

दूसरे छोटे-छोटे बच्चों ने गाया-

चलो पढ़ेंगे चन्द्रमा
चलो पढ़ेंगे सूरज

यह सुनते ही पहली कक्षा के लड़कों ने, जो जहाँ भी खड़े थे एक साथ गाना शुरू किया-

स में बड़े ऊ की मात्रा सू... र... ज सूरज
चलो पढ़ें आकाश-

यह सुनते ही पहली कक्षा के लड़कों ने फिर गाया-

अ में आ की मात्रा आ... क में आ की मात्रा का... श आकाश

एक-एक तारे को-
अरुंधति, ध्रुव, सप्तऋषि
मंगल, बृहस्पति, शनि
मेघ काले, कपसीले बादल को
चलो पढ़ेंगे नदियाँ-
उस पार जाने को
पुल, बाँध, सूखे और बाढ़ को
चलो पढ़ेंगे मिट्टी
मुरमी, मठासी, धूसर, कन्हार को
चलो पढ़ेंगे पहाड़
गिरने और चढ़ने को
चलो पढ़ेंगे शेर
चलो पढ़ेंगे बाघ

तब डरकर एक लड़के ने कहा -

जंगल में नहीं पढ़ेंगे शेर -
जाकर उनके पास
नहीं पढ़ेंगे बाघ

तब डरकर एक लड़के ने कहा -

तब डरकर एक लड़के ने कहा –
जंगल में नहीं पढ़ेंगे शेर
जाकर उनके पास
नहीं पढ़ेंगे बाघ
ढूँढो पहले इनकी सबसे मोटी किताब
स्कूल की पढ़ाई में इनको पढ़ लें
क्यों जाएँ हम करने इनसे सीधे मुलाकात।

चकमक जारी...